Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

1857 के बाद रियासतकालीन राजस्थान में उर्दू प्रेस और जनचेतना का विकास (1857–1940)

डॉ. नीलम*

* एसोसिएट प्रोफेसर, अपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – 1857 के विद्रोह के पश्चात उत्तार भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने प्रेस पर कठोर नियंत्रण और सेंसरशिप लागू की। विशेष रूप से राजनीतिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों, जैसे राजपूताना (वर्तमान राजस्थान), में सूचना के प्रवाह को सीमित कर दिया गया। ऐसी स्थिति में उर्दू प्रेस का उदय केवल समाचार–प्रसारण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने सामाजिक सुधार, शैक्षिक चेतना, प्रशासनिक पारदर्शिता और राजनीतिक जागरूकता के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।यह शोध–पत्र 1857 से 1940 के मध्य राजस्थान की रियासतों में सक्रिय उर्दू समाचारपत्रों की ऐतिहासिक यात्रा का विश्लेषण करता है और यह स्पष्ट करता है कि किस प्रकार उर्दू प्रेस ने औपनिवेशिक नियंत्रण तथा रियासतकालीन सत्ता संरचनाओं के बीच एक प्रभावी सार्वजनिक क्षेत्र (Public Sphere) का निर्माण किया। अध्ययन प्राथमिक अभिलेखीय स्रोतों, समकालीन उर्दू समाचारपत्रों, प्रशासनिक दस्तावेजों तथा द्वितीयक साहित्य पर आधारित है। निष्कर्षत: यह शोध स्थापित करता है कि उर्दू प्रेस ने राजस्थान में आधुनिक जनचेतना और नागरिक संस्कृति के विकास में निर्णायक योगदान दिया।

शब्द कुंजी – उर्दू प्रेस, राजस्थान, 1857 का विद्रोह, रियासतें, जनचेतना, औपनिवेशिक शासन, सार्वजनिक क्षेत्र।

प्रस्तावना – उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत में आधुनिक संचार माध्यमों का विकास तीव्र गति से हुआ, किंतु राजपूताना की रियासतें इस प्रक्रिया की मुख्यधारा से अपेक्षाकृत अलग रहीं। 1857 के विद्रोह के बाद ब्रिटिश शासन ने प्रेस पर सख्त निगरानी और नियंत्रण स्थापित किया, वहीं अधिकांश रियासतों में जनता तक सूचना पहुँचाने की कोई संगठित व्यवस्था नहीं थी।

ऐसे सामाजिक–राजनीतिक परिवेश में उर्दू प्रेस का उदय एक ऐतिहासिक घटना के रूप में सामने आता है। उर्दू, जो तत्कालीन प्रशासन, दरबार और शिक्षित समाज की प्रमुख भाषा थी, ने समाचारपत्रों को अपेक्षाकृत व्यापक पाठक–वर्ग उपलब्ध कराया। उर्दू अखबारों ने सरकारी आदेशों, न्यायिक निर्णयों, शैक्षिक विचारों और सामाजिक सुधार से जुड़े विषयों को जनता तक पहुँचाकर राजस्थान में जनचेतना के प्रारंभिक रूप को आकार दिया।

उर्दू प्रेस और उसके सामाजिक–राजनीतिक प्रभाव पर भारतीय इतिहासलेखन में पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है, किंतु उसका क्षेत्रीय वितरण असंतुलित रहा है। अधिकांश अध्ययन या तो औपनिवेशिक भारत में प्रेस के समग्र विकास पर केंद्रित हैं, अथवा बंगाल, उत्तर प्रदेश और दिल्ली जैसे क्षेत्रों तक सीमित हैं। रियासतकालीन राजस्थान, विशेषकर उर्दू पत्रकारिता के संदर्भ में, अपेक्षाकृत कम अध्ययन किया गया है।[1]

उर्दू पत्रकारिता के सामान्य इतिहास परएम. के. किदवई की कृति History of Urdu Journalism एक आधारभूत ग्रंथ मानी जाती है। किदवई उर्दू प्रेस के उद्भव, विकास और औपनिवेशिक सेंसरशिप के प्रभावों का समग्र विवरण प्रस्तुत करते हैं। उनका अध्ययन यह स्थापित करता है, कि 1857 के बाद उर्दू प्रेस ने सामाजिक और राजनीतिक चेतना के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। तथापि, उनका विश्लेषण मुख्यत: ब्रिटिश शासित क्षेत्रों तक सीमित है, और रियासतों के आंतरिक प्रेस तंत्र पर विस्तृत चर्चा नहीं करता।[2]

शम्सुर्रहमान फारूकी की Early Urdu Press: An Analytical Study उर्दूप्रेस की वैचारिक संरचना, भाषा–शैली और पाठक–वर्ग के निर्माण पर केंद्रित है। फारूकी यह स्पष्ट करते है, कि उर्दू अखबारों ने आधुनिकता, सुधार और तर्कशीलता को लोकप्रिय बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाई।[3] यद्यपि उनका अध्ययन वैचारिक रूप से समृद्ध है, परंतु वह भी क्षेत्रीय विशिष्टताओं, विशेषकर राजपूताना जैसे अर्ध–स्वायत्ता इलाकों, को सीमित रूप में ही संबोधित करता है।

औपनिवेशिक सत्ता और उर्दू पत्रकारिता के संबंधों परएस. एन. शेख की पुस्तक Urdu Newspapers and Colonial India उल्लेखनीय है। शेख प्रेस को औपनिवेशिक शासन और देशी समाज के बीच संवाद के माध्यम के रूप में देखते हैं। वे यह तर्क देते हैं, कि उर्दू अखबारों ने प्रत्यक्ष राजनीतिक टकराव से बचते हुए सामाजिक और आर्थिक मुद्दों के माध्यम से जनमत को आकार दिया। यह दृष्टिकोण प्रस्तुत शोध के लिए सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है, किंतु शेख का अध्ययन भी रियासतकालीन राजस्थान पर विशेष ध्यान नहीं देता।

राजस्थान के राजनीतिक और सामाजिक इतिहास के संदर्भ में रीमा हूजाकी History of Rajasthan तथा दशरथ शर्मा की Rajasthan kaltihas महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। ये ग्रंथ रियासतों की प्रशासनिक संरचना, सामाजिक पदानुक्रम और औपनिवेशिक प्रभावों को समझने में सहायक हैं।

हालांकि, इनमें प्रेस और संचार माध्यमों की भूमिका प्राय: संदर्भात्मक रूप में ही आती है, न कि स्वतंत्र विश्लेषण के रूप में।[4]

रियासतों और औपनिवेशिक सत्ता के संबंधों परबारबरा एन. रामुसैक की The Princes of Indiainthe Twilight of Empire एक सैद्धांतिक ढांचा प्रदान करती है। रामुसैक रियासतों को केवल निष्क्रिय राजनीतिक इकाइयों के रूप में नहीं, बल्कि औपनिवेशिक आधुनिकता के साथ संवाद करने वाली संरचनाओं के रूप में देखती हैं। यह दृष्टिकोण राजस्थान की रियासतों में उर्दू प्रेस की भूमिका को समझने के लिए उपयोगी है, क्योंकि प्रेस इसी संवाद का एक माध्यम था।[5]

सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों के संदर्भ मेंगेल मिनॉल्टकी The Khilafat Movement: Religious Symbolism and Political Mobilization प्रेस को जन mobilization का एक प्रमुख उपकरण मानती है। मिनॉल्ट का कार्य यह दिखाता है कि किस प्रकार धार्मिक प्रतीकों और समाचारपत्रों के माध्यम से राजनीतिक चेतना का प्रसार हुआ। यद्यपि उनका फोकस खिलाफत आंदोलन पर है, फिर भी उनका विश्लेषण यह संकेत देता है कि उर्दू प्रेस रियासतों में भी राष्ट्रीय आंदोलनों की वैचारिक पहुँच बढ़ाने में सक्षम था।[6]

अभिलेखीय स्रोतोंजैसे राजस्थान राज्य अभिलेखागार (बीकानेर) के प्रेस रिकॉर्ड, जयपुर स्टेट गजट (उर्दू अनुभाग) तथा अजमेर-मेरवाड़ा प्रशासनिक दस्तावेजसे यह स्पष्ट होता है, कि उर्दू अखबारों को निरंतर निगरानी, चेतावनियों और कभी-कभी प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद इन अखबारों का निरंतर प्रकाशन यह दर्शाता है, कि उनकी सामाजिक प्रासंगिकता और पाठक-वर्ग पर्याप्त रूप से सुदृढ़ था।

राजस्थान के प्रमुख उर्दू समाचारपत्र (1857-1940)[7]

- अखबार-ए-राजपूताना (जयपुर)
- तरजुमान-ए-राजस्थान (अजमेर)
- रियासत-ए-जयपुर गजट (उर्दू अनुभाग)
- सादिक-उल-अखबार (टोंक)
- अखबार-ए-अजमेर
- मरवाड़ टाइम्स (उर्दू अनुभाग)
- अल-हिलाल का वैचारिक प्रभाव

1. अखबार-ए-राजपूताना (जयपुर)[8]**-** अखबार-ए-राजपूताना जयपुर रियासत से प्रकाशित होने वाला एक महत्वपूर्ण उर्दू समाचारपत्र था, जो प्रशासनिक सूचनाओं, शाही आदेशों और जनहित से जुड़े विषयों के प्रकाशन के लिए जाना जाता था। यह अखबार रियासत और जनता के बीच संवाद का एक औपचारिक माध्यम था। इसमें सामाजिक सुधार, शिक्षा, कर व्यवस्था और स्थानीय प्रशासन से संबंधित समाचारों को प्रमुखता से स्थान दिया जाता था। औपनिवेशिक काल में यह पत्र रियासती दृष्टिकोण के साथ-साथ सीमित आलोचनात्मक टिप्पणियाँ भी प्रस्तुत करता था, जिससे इसकी भूमिका संतुलित मानी जाती है।

2. तरजुमान-ए-राजस्थान (अजमेर)[9] **-** तरजुमान-ए-राजस्थान अजमेर-मेरवाड़ा क्षेत्र का एक प्रभावशाली उर्दू समाचारपत्र था। यह पत्र विशेष रूप से राजनीतिक चेतना, सामाजिक मुद्दों और औपनिवेशिक नीतियों की आलोचना के लिए जाना जाता था। अजमेर सीधे ब्रिटिश प्रशासन के अधीन होने के कारण यह अखबार औपनिवेशिक शासन और भारतीय समाज के बीच टकराव को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। इसमें खिलाफत आंदोलन, कांग्रेस की गतिविधियों और मुस्लिम समाज से जुड़े प्रश्नों पर विस्तार से लेख प्रकाशित होते थे।

3. रियासत-ए-जयपुर गजट (उर्दू अनुभाग)[10] **-** रियासत-ए-जयपुर गजट का उर्दू अनुभाग एक अर्ध-सरकारी प्रकाशन था, जिसमें प्रशासनिक आदेश, कानून, नियुक्तियाँ और राजकीय घोषणाएँ प्रकाशित होती थीं। उर्दू अनुभाग का उद्देश्य उन वर्गों तक सूचना पहुँचाना था, जिनकी प्रमुख भाषा उर्दू थी। यह गजट यह दर्शाता है कि रियासतें उर्दू को प्रशासनिक और संचार की महत्वपूर्ण भाषा मानती थीं। शोध के लिए यह स्रोत रियासती शासन की नीति और भाषा-राजनीति को समझने में अत्यंत उपयोगी है।

4. सादिक-उल-अखबार (टोंक) - टोंक रियासत से प्रकाशित सादिक-उल-अखबार एक प्रभावशाली और वैचारिक रूप से सक्रिय उर्दू समाचारपत्र था। टोंक की मुस्लिम शासक परंपरा के कारण यह पत्र धार्मिक, शैक्षिक और सामाजिक मुद्दों पर विशेष ध्यान देता था। इसमें इस्लामी सुधार आंदोलनों, शिक्षा के प्रचार और सामुदायिक एकता से संबंधित लेख नियमित रूप से प्रकाशित होते थे। यह अखबार स्थानीय मुस्लिम समाज के सामाजिक इतिहास को समझने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

5. अखबार-ए-अजमेर - अखबार-ए-अजमेर एक लोकप्रिय क्षेत्रीय उर्दू समाचारपत्र था, जो स्थानीय प्रशासन, नागरिक समस्याओं और सामाजिक गतिविधियों को केंद्र में रखता था। यह पत्र आम जनता की भाषा और मुद्दों को प्रतिबिंबित करता था। इसमें नगर प्रशासन, कर व्यवस्था, न्यायिक मामलों और शिक्षा से संबंधित खबरें प्रमुखता से प्रकाशित होती थीं, जिससे यह पत्र जन-जीवन का दस्तावेज बन जाता है।

6. मरवाड़ टाइम्स (उर्दू अनुभाग) - मरवाड़ टाइम्स का उर्दू अनुभाग जोधपुर और आसपास के क्षेत्रों में उर्दू पाठकों के लिए प्रकाशित किया जाता था। यह अनुभाग मरवाड़ क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, प्रशासनिक निर्णयों और राजनीतिक घटनाओं को उर्दू पाठकों तक पहुँचाने का माध्यम था। यह तथ्य दर्शाता है कि अंग्रेजी और हिंदी के साथ-साथ उर्दू भी क्षेत्रीय पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण अंग बनी रही।

7. अल-हिलाल का वैचारिक प्रभाव - यद्यपिअल-हिलालसीधे राजस्थान से प्रकाशित नहीं होता था, फिर भी मौलाना अबुल कलाम आजाद द्वारा संपादित इस पत्र का वैचारिक प्रभाव राजस्थान की उर्दू पत्रकारिता पर गहराई से पड़ा। अल-हिलाल की राष्ट्रवादी, पैन-इस्लामिक और औपनिवेशिक विरोधी विचारधारा ने राजस्थान के उर्दू समाचारपत्रों की भाषा, तेवर और विषय-वस्तु को प्रभावित किया। इसके लेखों और विचारों की प्रतिध्वनि तरजुमान-ए-राजस्थान और सादिक-उल-अखबार जैसे पत्रों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।[11]

उर्दू पत्रों का प्रभाव

1. प्रशासनिक सूचना का प्रसार - उर्दू अखबारों ने रियासतों के आदेश, कर-नीतियाँ, न्यायिक फैसले और प्रशासनिक परिवर्तनों को जनता तक पहुँचाकर शासन-प्रणाली को अधिक पारदर्शी बनाया। इन समाचार पत्रो के माध्यम से आम जन को समस्त देश में चल रही स्वतंत्रता सेनानियों की गतिविधियों और अंग्रेजी शासन की तानाशाही की जानकारी मिलती रही जिससे आम जन में आक्रोश पनपा और 1942 का भारत छोडो आन्दोलन में एक जुट होकर विदेशी सत्ता के खिलाफ खड़े हो गए। इन समाचार पत्रों के अलावा सरकारी गजट ने भी प्रशासनिक सूचनाओं से आम जन को प्रभावित किया।

2. **शिक्षा और आधुनिक विचार –** उर्दू पत्रों ने राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव ही नहीं डाले बल्कि इन अखबारों ने आधुनिक शिक्षा, बालिका–शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया, जिससे शिक्षित मध्यवर्ग का विकास हुआ।इस समय तक महिलाओं को समाज पढ़ने के लिए खुले तौर पर बाहर नहीं भेजते थे लेकिन उर्दू मैगजीन शमा, शादमा और औरत में महिलाओं के एक अलग पक्ष को उजागर किया। इसमें महिलाओं को विज्ञापन में प्रयोग के तौर पर अपनाया गया जो वर्तमान में विज्ञापन जगत में काफी प्रसिद्ध है।

3. **सामाजिक सुधार –** बाल विवाह, पर्दा–प्रथा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और टीकाकरण जैसे मुद्दों पर प्रकाशित संपादकीयों ने सामाजिक विमर्श को दिशा दी।

4. **साम्प्रदायिक सौहार्द –** उर्दू प्रेस ने हिंदू–मुस्लिम एकता पर बल देते हुए सामाजिक समरसता को प्रोत्साहित किया, जो बहुधर्मी राजस्थान के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण था।

5. **जनता और शासन के बीच संवाद –** अखबार एक प्रकार की 'जन–परिषद' के रूप में उभरे, जहाँ नागरिक अपनी समस्याओं और असंतोष को अभिव्यक्त कर सके।

6. **राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव –** 1910 के बाद कांग्रेस गतिविधियाँ, खिलाफत आंदोलन और औपनिवेशिक नीतियों की आलोचना उर्दू प्रेस में स्थान पाने लगी, जिससे राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ।

निष्कर्ष – इस शोध के निष्कर्ष स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि उर्दू पत्रकारिता का विकास केवल साहित्यिक या भाषाई परिघटना नहीं था, बल्कि यह औपनिवेशिक भारत में सामाजिक चेतना, राजनीतिक संवाद और प्रशासनिक आलोचना का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरी। अध्ययन से यह सामने आया है कि उर्दू प्रेस ने जनता और सत्ता के बीच एक वैकल्पिक संवाद–सेतु का निर्माण किया, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ अंग्रेजी या हिंदी प्रेस की पहुँच सीमित थी।

यह शोध यह भी स्थापित करता है कि प्रारंभिक उर्दू समाचारपत्रों ने औपनिवेशिक सूचना–तंत्र को चुनौती देते हुए स्थानीय मुद्दों, धार्मिक–सांस्कृतिक पहचान और राजनीतिक आंदोलनों को व्यापक स्वर दिया। किदवई, फारूकी और शेख के अध्ययनों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उर्दू प्रेस ने न केवल समाचार दिए, बल्कि विचारधाराओं का निर्माण भी किया।

राजस्थान के संदर्भ में, राज्य अभिलेखागार, जयपुर स्टेट गजेट और अजमेर–मेरवाड़ा के प्रशासनिक दस्तावेजों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है, कि रियासती भारत में उर्दू पत्रकारिता प्रशासनिक नीतियों की आलोचना, जनसमस्याओं के प्रकाशन और सामाजिक समन्वय की भूमिका निभा रही थी। यह क्षेत्रीय उर्दू प्रेस को राष्ट्रीय इतिहास लेखन में पुन: स्थापित करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

शोध यह भी दर्शाता है कि उर्दू पत्रकारिता को औपनिवेशिक काल में निरंतर निगरानी, सेंसरशिप और कानूनी प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा, फिर भी उसने प्रतिरोध और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की परंपरा को जीवित रखा। खिलाफत आंदोलन के संदर्भ में यह स्पष्ट होता है कि उर्दू प्रेस ने धार्मिक प्रतीकों को राजनीतिक चेतना में रूपांतरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि उर्दू पत्रकारिता को भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में एक सीमांत या गौण भूमिका के रूप में देखना ऐतिहासिक दृष्टि से अनुचित है। औपनिवेशिक भारत में उर्दू प्रेस ने न केवल सूचना के प्रसार का कार्य किया, बल्कि उसने सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक विमर्श को दिशा देने में सक्रिय भूमिका निभाई।

राजस्थान और अन्य रियासती क्षेत्रों के उदाहरण यह सिद्ध करते हैं कि उर्दू पत्रकारिता शासन और प्रजा के बीच संवाद का एक प्रभावी माध्यम थी, जो स्थानीय संदर्भों को राष्ट्रीय चेतना से जोड़ती थी। यह शोध इस तथ्य को सामने लाता है कि अभिलेखीय स्रोतों और उर्दू समाचारपत्रों की उपेक्षा के कारण अब तक पत्रकारिता इतिहास का एक महत्वपूर्ण पक्ष अधूरा रहा है। अंतत:, यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि उर्दू पत्रकारिता के बिना औपनिवेशिक भारत की राजनीतिक संस्कृति, जनआंदोलनों और सूचना–प्रणाली को समग्र रूप से नहीं समझा जा सकता। यह शोध भविष्य के अध्ययनों के लिए एक सशक्त आधार प्रदान करता है, विशेषकर क्षेत्रीय उर्दू प्रेस और रियासती अभिलेखों के गहन विश्लेषण की दिशा में।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. Usmani, A.F. (1978). *Rajasthan mai Urdu.*Author. (AbulFaizUsmani)
2. Usmani, A.F.(1985). *Rajasthan Main Urdu zabaan-o-adabkeliyeghair Muslim hazraakikhidmaat. Arabic & Persian Research Institute. (AbulFaizUsmani)*
3. Usmani, A.F.(1987). *Nakhlisatn.*Author. (AbulFaiz Usmani)
4. Usmani, A.F.(1992). *Rajasthan Mein Urdu Zabaan-o-adab 1857 taj.*Rajasthan Urdu Academy. (AbulFaiz Usmani)
5. Usmani, A.F.(2000), *Rajasthan main Urdu Kialata aleemaurtahqeeq – Azadikebaad.* Author. (AbulFaiz Usmani)
6. Usmani, A.F. (2008). *Rayasat Tonk main Farsi aur Urdi Zabaan-o-adabkitareekhkairtiqa.*Author. (AbulFaiz Usmani)
7. C.A. Bayly, *Empire and Information: Intelligence Gathering and Social Communication in India,* 1780-1870 (Cambridge: Cambridge University Press, 1996)
8. Rajasthan State Archives, Bikaner, *Press Records (1857-1940) (*Bikaner: Government of Rajasthan)
9. *Jaipur State Gazette,* Urdu Section (Jaipur: Jaipur State Government Press).
10. Ajmer-Merwara, *Administrative Records* (Government of India), consulted at Rajasthan State Archives/ National Archives of India.
11. Khuda Bakhsh Oriental Library, Patna, *Urdu Newspaper Collection* (Archival holdings).

****